ई.वी. रामासामी पेरियार के चुने हुए भाषण

एक नास्तिक का
भविष्यलोक

अनुवादक–संपादक

ओमप्रकाश कश्यप

D. Narayana

एक नास्तिक का भविष्यलोक

(ई.वी. रामासामी पेरियार के चुने हुए भाषण)

अनुवादक–संपादक

ओमप्रकाश कश्यप

एक नास्तिक का भविष्यलोक

(ई.वी. रामासामी पेरियार के चुने हुए भाषण)

अनुक्रमणिका

1.	भूमिका : वर्णवादी नैतिकता को ललकारता विचारक	11
2.	पेरियार : सामाजिक न्याय का अनथक योद्धा	17
3	लोकप्रिय दार्शनिक मिथों की वैज्ञानिक पड़ताल	41
4.	भविष्यलोक : एक नास्तिक का यूटोपिया	69
5.	वायकम सत्याग्रह : अस्पृश्यता के विरुद्ध निर्याणक जंग	82
6.	ईश्वर और आदमी	99
7.	डॉ. आंबेडकर के धर्म-परिवर्तन पर पेरियार	120
8.	ग्रामीण विकास पर पेरियार की दृष्टि	129
9.	बुद्धिवाद की प्रासंगिकता	141
10.	बुद्धिवाद उतना ही पुराना है जितना बौद्ध दर्शन	178
11.	जब पेरियार गाँधी से मिले	192
12.	पेरियार और विनोबा भावे की मुलाकात	198
13.	पेरियार की पत्रिकाओं से कुछ सूक्तियाँ	199

ईश्वर नहीं है!
ईश्वर नहीं है!!
ईश्वर हरगिज नहीं है!!!

जिसने ईश्वर को गढ़ा वह मूर्ख था
जो ईश्वर की वकालत करता है, वह महाधूर्त्त है
जो ईश्वर की पूजा करता है, वह असभ्य है।

ईश्वर नहीं है!
ईश्वर नहीं है!!
ईश्वर हरगिज़ नहीं है!!!

ईवी रामासामी पेरियार

प्रकाशकीय

आज का समय भारतीय समाज के लिए एक कठिन समय है। ख़ासतौर से उन सभी समाजों के लिए जो हाशिए पर हैं और जिनके रक्त और हड्डियों पर ये ऊँची अट्टालिकाएँ खड़ी हैं। जिनके ख़ून की एक-एक बूँद से भारत के एक-एक कण को जीवन मिला है और शोषण के इतने विशाल पहाड़ के नीचे उनकी भावनाएँ-इच्छाएँ-आकांक्षाएँ दब गई हैं। वे अपनी आजादी के बारे में गाफ़िल ही दिखाई देते हैं। इनको हम इतिहासक्रम में दास, गुलाम, शूद्र, अतिशूद्र अथवा बहुजन के रूप में जानते हैं। ऐसे लोगों को जगाने के लिए लगातार चिंतक, विचारक और योद्धा होते रहे हैं। इनके जागने और लड़ने से ही समाज में गुणात्मक परिवर्तन हुए हैं और होते रहेंगे। यह अलग बात है कि जिन वर्गों ने इनका सर्वस्व लूटा है उन्होंने इनके ख़िलाफ़ असंख्य षड्यंत्र किए और इनको काबू में रखा, लेकिन आज़ादी और अधिकार की लड़ाई कभी खत्म नहीं हुई।

महान भारतीय विचारक, चिंतक और योद्धा आंदोलनकारी ई.वी. रामासामी पेरियार पिछली सदी से ही बहुजन और वंचित समाजों के भीतर आत्मसम्मान और बराबरी की भावना जगाने, उनके मानवीय अधिकारों के लिए डटकर लड़ने वाले ऐसे महान व्यक्तित्व के रूप में समादृत हैं जिनके विचारों के बिना आज बहुजन विमर्श, संघर्ष, विजय और परंपरा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हिन्दी भाषी समाजों में उनका नाम तो बहुत पहले ही फैल चुका था लेकिन अब उनके मौलिक लेखों, भाषणों और व्याख्यानों का प्रसार-प्रसार भी बहुत तेजी से होना शुरू हो चुका है। ई.वी. रामासामी पेरियार दक्षिण भारत के ऐसे समाज सुधारक थे, जिन्हें दक्षिण एशिया का सुकरात कहा गया। संभवतः इसलिए कि अपने संघर्षों में उन्होंने कभी समझौता नहीं किया बल्कि दृढ़प्रतिज्ञ रहे। सुकरात की ही तरह वे सत्य के लिए जहर पीने को तैयार थे। पेरियार ने आत्मसम्मान आन्दोलन नामक एक कार्यक्रम चलाया और धर्म, जाति और ईश्वर को नकारते हुए सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए जीवनपर्यंत आन्दोलन किया। शूद्र-अतिशूद्र और पिछड़े समाज के लोग, जिन्हें ब्राह्मणों ने धर्म और ईश्वर का डर दिखाकर अपने काबू में रखा, यहाँ तक कि सार्वजनिक मार्गों पर उनके चलने पर भी प्रतिबन्ध लगाया, छात्रावासों में उनके

बच्चों के लिए अलग रसोई की व्यवस्था करने के लिए बाध्य किया और उस रसोई में पकने वाले भोजन का स्तर भी घटिया निर्धारित किया गया। पेरियार ने इन सबके विरुद्ध निर्णायक संघर्ष किया। उस समय उनके सामने तमिलनाडू और राष्ट्रीय राजनीति के धुरंधर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी थे लेकिन पेरियार बिना विचलित हुए लड़े और विजई हुए। इसी तरह जब वे वायकम में संघर्ष कर रहे थे तो वायकम के महाराजा से भी भिड़ने से नहीं डरे और इस बात की भी परवाह नहीं की कि महाराजा कई बार उन्हें विशिष्ट अतिथि के रूप में बुला चुके हैं। पेरियार 20वीं सदी के ऐसे सामाजिक योद्धा थे जो अपने मिशन के लिए हर सुख-सुविधा का त्याग कर देते थे। उनके लिए जनता और उसकी मुक्ति का संघर्ष ही सर्वोपरि था जिसके लिए वे जिए और मरे। उन्होंने सामजिक समानता, जाति उन्मूलन, छुआछूत के ख़िलाफ़ लोगों को जागरूक बनाने और तर्क के साथ सोचने-विचारने के लिए जगह-जगह जाकर लगातार भाषण दिए। उनके भाषणों का पहली बार हिन्दी में अनुवाद *अगोरा प्रकाशन* ने अपने पाठकों के सामने लाने के निर्णय किया है।

जाने-माने लेखक चिंतक-विचारक *ओमप्रकाश कश्यप* ने पेरियार के इन चुने हुए भाषणों का अनुवाद किया है। सहज और प्रवाहमयी भाषा में प्रस्तुत किए गए इन भाषणों को पढ़कर हिन्दी क्षेत्र के पाठक आसानी से पेरियार के विचार-जगत से परिचित तो होंगे ही बल्कि यह भी देख सकेंगे कि स्वयं उनके समय में उनका समाज किन चुनौतियों से वाबस्ता है और उसकी जड़ता किस प्रकार टूटेगी? इन भाषणों को पढ़कर यह सहज ही अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि पेरियार समाज और व्यवस्था-परिवर्तन की अपनी परियोजनाओं को कितने विविध रेंज में संचालित कर रहे थे। और जब भी आप समाज और व्यवस्था बदलने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं तो आपको किन चीज़ों के ऊपर ख़ास ध्यान देने की ज़रूरत होती है!

अगोरा प्रकाशन समाज और व्यवस्था परिवर्तन के लिए ज़रूरी बौद्धिक सामग्री के संचयन, सम्पादन, प्रकाशन और वितरण के लिए प्रतिबद्ध जन-संस्थान है। यह पूरी तरह से जनता के भीतर ज्ञान-विज्ञान और मुक्तिकामी विचारों की अलख जगाने में लगा हुआ है और जिस समय चारों तरफ़ मुनाफ़ाखोरी का बोलबाला है, उस समय भी अपने प्रतिबद्ध लेखकों, सम्पादकों और कार्यकर्ताओं के बूते पर यह जनता के बीच रहकर जनता के साथ खड़ा है। इसे आगे बढ़ाने के लिए आप सबके सहयोग की महती आवश्यकता है और हमें आपके ऊपर बहुत ज्यादा भरोसा है!

धन्यवाद।

अपर्णा

भूमिका

वर्णवादी नैतिकता को ललकारता विचारक

ई.वी. रामासामी पेरियार से हिंदी पट्टी का परिचय काफी विलंब से हुआ। वह भी आधा–अधूरा। हिंदी वालों को उनसे परचाने वाले थे ललई सिंह यादव। वे पेरियार से इतने प्रभावित थे कि अपने नाम से जाति–सूचक शब्द 'यादव' हटाकर 'पेरियार' जोड़ लिया था। जुलाई 1969 में पेरियार ललई सिंह ने ही, पेरियार की पुस्तक *रामायण : एक ट्रू स्टोरी* का हिंदी अनुवाद *सच्ची रामायण* शीर्षक से प्रकाशित किया था। पुस्तक के बाजार में आते ही पूरी हिंदी पट्टी में हंगामा मच गया था। धर्म के धंधागीर बिलों से निकल आए थे। उनके दबाव में उत्तर प्रदेश सरकार ने, दिसंबर 1969 में पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया। अदालत के फैसले से प्रतिबंध तो हट गया, मगर पुस्तक के माध्यम से हिंदी पट्टी में पेरियार की जो छवि बनी, वह प्रतिक्रियावादी इंसान की थी। बेहद इकहरी और नकारात्मक।

पर्याप्त जानकारी के अभाव में उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में 'प्रोजेक्ट' किया जाने लगा, जो जनसाधारण की आस्था को चुनौती देता था, धार्मिक प्रतीकों का खुलेआम मखौल उड़ाता था। चूँकि औसत भारतीय पत्थर की मूर्ति को देवता मानकर पूजता है, धार्मिक प्रतीकों और टोटमों से प्रेरणा लेता है। अज्ञानतावश धर्म को नैतिकता और समाजादर्श का एकमात्र स्रोत माने रहता है। वह सोच ही नहीं पाता कि धर्म के बगैर भी सामान्य नैतिकता और सामाजिक स्थायित्व संभव है, इसलिए धर्म पर हमला या उसकी आलोचना उसे अपने समाज और संस्कृति की आलोचना लगने लगती है। आलोचना करने वाला व्यक्ति अनायास ही समाज–विरोधी तथा अनैतिकता का पोषक मान लिया जाता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। कुछ महीने पहले हिंदी पट्टी के एक संवेदनशील और समसामयिक घटनाओं पर नजर रखने वाले व्यक्ति से पेरियार का जिक्र किया तो उन्होंने छूटते ही कहा था, 'वही पेरियार जो हिंदू देवी–देवताओं का अपमान करते और धर्मग्रंथों को जलाते थे!'

धर्माचारियों और पुरोहित वर्ग की बात छोड़िए, पढ़े–लिखे लोग भी पेरियार के

बारे में यही राय रखते हैं। धर्म की तीखी आलोचना के पीछे उनका दर्शन क्या था? धर्म के निषेध द्वारा वे चाहते क्या थे? इस पर कोई नहीं सोचता। यह बात भी छिपा ली गई कि पेरियार केवल हिंदू धर्म नहीं, अपितु धर्म नामक पूरी संस्था को उखाड़ फेंक देना चाहते थे। वे ईसाई और इस्लाम धर्म पर भी उतने ही हमलावर थे, जितने हिंदू धर्म पर। बुद्धिवाद(नास्तिकता) के प्रचार के लिए उन्होंने अपने प्रकाशन से जो पुस्तकें प्रकाशित की थीं, उनमें से अधिकांश विदेशी लेखकों की थीं। उनमें चर्च को निशाना बनाया गया था। ईसाई धर्म पर हमला करके उन्होंने सरकार और ईसाई समुदाय दोनों को अपना दुश्मन बना लिया था, जिसके लिए उन्हें सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा था।

यह सच है कि पेरियार ने धार्मिक प्रतीकों पर हमला किया था। राम के चित्रों की होली जलाई थी। किंतु पेरियार का आंदोलन केवल वहीं तक सीमित नहीं था। उनका वास्तविक संघर्ष समाजार्थिक असमानता के विरुद्ध था। वे जानते थे कि समाज में वर्णव्यवस्था की जड़ें बहुत गहरी हैं। पिछले ढाई–तीन हजार वर्षों से वह लोगों के मन में समाई हुई है। उसका सुरक्षा कवच बना धर्म मनुष्य की स्वतंत्र मन से सोचने–समझने की शक्ति को क्षीण कर देता है। जाति–भेद को दैवीय बताकर वह सामाजिक असमानता को स्थायी घोषित कर देता है। इसलिए उन्होंने जाति के साथ–साथ धर्म को भी निशाने पर लिया। जातीय भेदभाव को मिटाने के लिए, उसे प्रश्रय देने वाले हिंदू धर्म को चुनौती देने वाले, पेरियार अकेले नहीं थे। ज्योतिबा फुले से लेकर डॉ. आंबेडकर तक सभी ने हिंदू धर्म की आलोचना की थी। अंतर केवल इतना था कि पेरियार आमूल परिवर्तन के लिए, धर्म और जाति दोनों को एक साथ नष्ट कर देना चाहते थे।

कारण किसी से छिपा नहीं था। शताब्दियों से जातीय भेदभाव और दमन का शिकार रहे शूद्रातिशूद्र अपनी मुक्ति के धर्मांतरण को चुनते आए थे। पहले वे इस्लाम की राह लेते थे। ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन आते ही उन्होंने ईसाई धर्म को भी अपनाना आरंभ कर दिया। शिक्षा के प्रसार के नाम पर मिशनरियों ने भारत का रुख किया तो ईसाई धर्म की ओर अंतरण की घटनाओं में तेजी आने लगी। लोग जातीय उत्पीड़न तथा न्यूनतम मान–सम्मान की अपेक्षा में धर्मांतरण को चुनते थे। मगर जाति की जकड़न कुछ ऐसी थी कि धर्मांतरण के बावजूद वह मनुष्य के साथ चिपकी रहती थी। नए धर्म में भी उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता था। धर्मांतरण से लाभ होना तो दूर, धर्मांतरित हुए लोगों की एक उपजाति अवश्य बन जाती, जो उनकी संगठित शक्ति को और भी कम कर देती थी। उससे बचने के लिए पेरियार ने जाति के साथ–साथ धर्म नामक संस्था से मुक्ति का आवाहन भी किया। ब्राह्मणों